तृतीय अध्याय

''आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप''

तृतीय अध्याय

"आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप"

प्रस्तावना -

मध्यवर्ग परिभाषा, स्वरूप आदि का विवेचन प्रथम अध्याय में किया है जिसे दोहराना उचित नहीं समझता। विभिन्न आलोचकों एवं समाजशास्त्रियों ने मध्यवर्गीय सदस्यों का वर्गीकरण किया है। कुछ महत्त्वपूर्ण आलोचकों का वर्गीकरण निम्नानुसार -

डॉ. हेमराज 'निर्मम' ने मध्यवर्ग के अंतर्गत आनेवाले सदस्यों के संदर्भ में लिखा है। इस वर्ग में -

1. आधुनिक प्रमुख व्यवसाय के सदस्य तथा वकील, चिकित्सक, प्रोफेसर, लेक्चरर (व्याख्याता), सभी प्रकार के इंजीनियर, अभिनेता।
2. सिविल सेवाओं के अधिकारी, पुलिस और अन्य सैन्य अधिकारी।
3. लेखक, संपादक, उपसंपादक, संवाददाता, अनुवादक, चित्रकार, विज्ञापन अधिकारी, संगीतज्ञ, फोटोग्राफर।
4. उत्पादन के सरकारी कारखानों, मिलों के प्रबंधक, परामर्शदाता, संपर्क अधिकारी, एजेंट, सेल्समन आदि।
5. वाणिज्य संस्थाओं के प्रबंधक, उपप्रबंधक, लेखाकार, पर्यवेक्षक, बैंक कर्मचारी, कार्यालय अधिक्षक आदि।
6. राजनीति दलों, ट्रेड युनियनों, साहित्यिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के वैतनिक अधिकारी तथा समाज सेवक।
7. अधिकांश, शिक्षित दुकानदार, छोटे उद्‌योगपति, ठेकेदार, जीवन-बीमा के एजेंट।
8. लिपिक, सहायक, रेल्वे कर्मचारी, टिकट बाबू, टिकट चैकर तथा हाथसे काम करनेवाले, टेलीफोन ऑपरेटर, वकीलों के मुंशी तथा कर्मचारी आदि सदस्यों को मध्यवर्ग के अंतर्गत लिया जा सकता है।"[1]

इसके साथ-साथ डॉ. अर्जुन चव्हाण ने भी मध्यवर्ग को इस प्रकार विभाजित किया है -

1. सरकारी / प्राइवेट संस्थाओं के प्रबंधक, परामर्शदाता, अधिकारी, विक्रेता एजेंट।
2. व्यापारी संस्थाओं के सेवक, बैंक कर्मचारी, प्रबंधक, पर्यवेक्षक, कार्यालय अधिक्षक, लेखागार, लिपिक।
3. डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, सनदी लेखापाल (चार्टर्ड अकाउंटंट), विज्ञापन सहायक, लेखा-परीक्षक।
4. शैक्षिक संस्थाओं के उच्च वैतनिक अधिकारी, प्राध्यापक, व्याख्याता, अध्यापक, लिपिक, महाविद्यालयीन शिक्षा पानेवाले छात्र।
5. संपादक, उपसंपादक, अनुवादक, लेखक, कवि, पत्रकार, चित्रकार, संगीतकार, किसी कला में प्रवीण कलाकार।
6. उच्च उत्पन्न प्राप्त करनेवाले किसान, होटलवाले, दुकानदार, उद्योगपति, ठेकेदार, व्यापारी।
7. सरकारी सेवाओं में स्थित सभी अधिकारी, पुलिस, सैन्य अधिकारी, जिलाधीश, न्यायाधीश, रेल अधिकारी, क्लर्क, नर्स, कंपाउंडर।
8. राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, साहित्यिक, धार्मिक, संस्थाओं के अधिकारी तथा सामाजिक कार्यकर्ता।
9. कृषि, डाक, तार, परिवहन, दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचार-पत्र तथा शिक्षा विभाग के वैतनिक कर्मचारी।''[2]

मध्यवर्गीय सदस्यों की उपर्युक्त सूची कोई अंतिम सूची नहीं है। आज मध्यवर्ग के उत्पन्न, आय एवं शिक्षा, रहन-सहन के परिवर्तन के कारण मध्यवर्गीय स्वरूप एवं सूची में बदलाव आया है। आधुनिक मध्यवर्ग सुविधाओं से परिपूर्ण एवं उसकी रहन-सहन उच्च स्तर की हो गई है। परिणाम स्वरूप हमें वह उच्च वर्गीय होने का भ्रम निर्माण करता है। आज मध्यवर्ग में भौतिक जीवन दर्शन को महत्त्व मिला है। आज समाज में मध्यवर्ग के सदस्यों की संख्या सर्वाधिक है। समाज के विकास एवं गतिमानता में यह वर्ग अपना पूर्ण सहयोग दे रहा है। मध्यवर्ग को लेकर हिंदी

में शुरू से ही लेखन होता आ रहा है। साठोत्तरी काल में हिंदी उपन्यासों में इस वर्ग चित्रण ने विशेष स्थान प्राप्त किया है। आधुनिक उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण प्रमुख रूप में न होकर एक अंग के रूप याने संश्लिष्ट रूप में हो रहा है। उपर्युक्त सूची को आधार बनाकर विवेच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग का विवेचन यहाँ हम करेंगे -

3.1 राजेंद्र यादव के 'शह और मात' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप -

राजेंद्र यादव का उपन्यास-साहित्य परिस्थिति की उपज है। समकालीन परिवेश ने उनकी अभिव्यक्ति को समृद्ध किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशा का बड़ा सशक्त चित्रण किया है। राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय जीवन का मार्मिक एवं यथार्थ रूप में चित्रण किया है। इसका प्रमुख कारण है उनका अपना जीवन मध्यवर्गीय परिवार में संघर्षपूर्ण एवं अभावों में बीता है। उनके सभी उपन्यासों के पात्र उच्च-मध्यवर्ग तथा निम्न-मध्यवर्ग से संबंध रखते हैं। उनके 'सारा आकाश' उपन्यास में निम्न-मध्यवर्ग का रूढ़ि-परंपरा, संस्कारों का विरोध तथा मध्यवर्गीय युवक के अस्तित्व संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, महत्त्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सही पीड़ा का चित्रण है। 'कुलटा, 'मंत्रविध', 'उखड़े हुए लोग' तथा अन्य उपन्यासों में मध्यवर्गीय समस्याओं एवं मध्यवर्ग के नई पीढ़ी के विरोध एवं विद्रोह का अंकन है। उनके उपन्यासों के संदर्भ में भाऊसाहेब परदेशी लिखते हैं- "उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार की समस्या, मध्यवर्गीय जीवन का संघर्ष, दांपत्य जीवन की समस्या, लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या, कुरूपता की ग्रंथि की समस्या, नया सौंदर्य का स्वरूप तथा मध्यवर्गीय लेखक की ट्रेजडी, पराजय और खंडित व्यक्तित्व की समस्याओं को चित्रण हुआ है।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीड़ा एवं संघर्ष को वाणी देने का कार्य उन्होंने उपन्यासों के माध्यम से किया है। डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय राजेंद्र यादव के उपन्यासों की विषयवस्तु के संदर्भ में कहते हैं - "राजेंद्र यादव के उपन्यासों का उद्देश्य प्रगतिवादी चिंतन के आधार पर मध्यवर्गीय समाज के पारिवारिक जीवन का विश्लेषण तथा चित्रण करना है।"[4] अतः मध्यवर्ग की व्यथाकथा को अपनी लेखनी द्वारा यादव ने प्रस्तुत किया है।

'शह और मात' उपन्यास में लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या एवं मध्यवर्गीय लेखक की ट्रेजडी, पराजय और खंडित व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में मध्यवर्ग के अंतर्गत

आनेवाले 'लेखक', डॉक्टर, रीयासती याने बड़े जमींदार, उच्च शिक्ष पानेवाले छात्र, अध्यापक, कार्यालयों में कार्य करनेवाले कर्मचारी आदि सदस्यों का चित्रण है। 'शह और मात' में बंबई जैसे महानगर में रहनेवाले मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय परिवार एवं व्यक्ति का संघर्ष, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पक्ष को 'शह और मात' में रूपायित किया है। इस उपन्यास में सबसे अधिक चित्रण मध्यवर्गीय लेखक, उसके संघर्ष एवं अर्थाभाव, बेरोजगारी से पीड़ित जीवन का है।

उपन्यास का नायक उदय एक लेखक है। वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने एवं लेखक बनने के लिए अपने गाँव को छोड़कर बंबई जैसे महानगर में आया है। उसे इस महानगर में अर्थाभाव एवं बेरोजगारी के कारण फटीचर हालत में रहना पड़ता है। उदय के फटीचर हालत के कारण ही उसकी प्रेमिका रश्मि उसे छोड़ देती है। लेखक ने रश्मि के द्वारा मध्यवर्गीय युवतियों की दृष्टि, धन लोलुपता एवं उनका जीवन के प्रति बदलते रवैये को स्पष्ट किया है। रश्मि उदय से प्रेम तो करती है लेकिन धनाभाव के कारण अपने जीवन को संघर्ष में धकेल देना नहीं चाहती और आज मध्यवर्गीय युवतियाँ रश्मि की तरह धन के सामने न पति के चारित्र्य को देखती हैं न उसके सौंदर्य को और न उसके कर्तव्यक्षमता को। उदय मध्यवर्गीय उन युवकों का प्रतीक है जो अपने भविष्य को सक्षम, सुखी एवं यशस्वी बनाने के लिए गाँव छोड़कर शहर आते हैं लेकिन महानगरीय जीवन की भयावहता तथा वहाँ का दूषित परिवेश, उसे पराजित एवं उपेक्षित कर देता है और यही उदय के साथ हुआ है। इन वजहों से ही मध्यवर्गीय युवक आज निराश होकर अनैतिक एवं बुरे कार्य करके दिशाहीन हो रहे हैं। राजेंद्र यादव ने उदय के माध्यम से महानगरों में रहनेवाले लेखकों का सच्चा बयान हमारे सामने रखा है।

उदय की रहन-सहन साधारण है। अर्थार्जन के लिए वह अपने लेखन को बेच देता है। अनुवाद का कार्य करता है। उसकी ऊँची आकांक्षाओं को समाज की भ्रष्ट व्यवस्था पूरी नहीं होने देती है। उदय महानगरों में जीवन बीतानेवाले मध्यवर्गीय लेखक के संदर्भ में कहता है- ''जिनके साथ श्रद्धेय लग गया है, उन्हें छोड़कर हिंदुस्तान में सिर्फ लेखन पर कोई रहा है आज तक ? बंगला और मराठी का शोर है, लेकिन मुझे तो एक भी लेखक नहीं दिखता जो केवल अपने मन का लिखकर मध्यवर्गीय नागरिक के ढंग से रह रहा हो।''[5] इससे स्पष्ट होता है कि शहर में

मध्यवर्गीय लेखक केवल लेखन के द्वारा या ईमानदार लेखनी के द्वारा जीवन नहीं बीता पाता है उसे अन्य कार्य करने पड़ते हैं जो नियम बाह्य या अनैतिक भी हो सकते हैं।

'शह और मात' में उच्च शिक्षा पानेवाली सुजाता, रेखा तथा उनकी सहेलियाँ मध्यवर्गीय युवतियों के रूप में हमारे सामने आती हैं। सुजाता मध्यवर्गीय परिवार में रहती है। मध्यवर्गीय संस्कारों में रहने तथा पढ़नेवाली यह युवती खुले (Bold) मन की है। उसके घर का खाना-पिना सब कुछ उच्च स्तर का है। पिता डॉक्टर होने के कारण उसे स्वातंत्रता देते हैं। वह एम्. ए. में पढ़ती है तथा कहानी लेखिका के रूप में प्रसिद्ध है। वह एक अच्छी कलाकार भी है। अपने दोस्तों को लेकर वह घर भी आती है। राजेंद्र यादव ने यहाँ सुजाता के माध्यम से महानगरों में रहनेवाली मध्यवर्गीय युवतियों का चित्रण किया है। महानगरों में आज युवतियों को स्वातंत्र्य तो दिया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप कुछ युवतियाँ दिशाहीन हो रही हैं तो कुछ सफल हो रही हैं। दिशाहीनता में कुछ युवतियों का जीवन बरबाद होता है। उनमें अहंभाव, अकेलापन, घूटन और अलगावबोध की भावना है, सुजाता के माध्यम से लेखक ने मध्यवर्गीय युवतियों की प्रेम की संकल्पना, विवाह विषयक मान्यताएँ, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, नारी अस्तित्व एवं स्वावलंबन की महत्त्वकांक्षाओं को स्पष्ट किया है।

मध्यवर्गीय युवतियाँ प्रेम के नाम पर शारीरिक भोग एवं प्रेम को समय बीताने का साधन के रूप में मान रही हैं। वह प्रेम में असफलता आने पर अपनी मनोदशा खो बैठती हैं। आज अपने जीवन में विवाह, पति का चुनना, शिक्षा आदि संबंधी निर्णय मध्यवर्गीय नारियाएँ खुद ले रही हैं। इसी वजह से सुजाता भी अपने विवाह के संदर्भ में 'अक्का' की दखलांदाजी से नाराज हो जाती है। वह अपना जीवन पूर्ण स्वातंत्र्य में बीताना चाहती है, खूब नाम कमाना चाहती है। आज मध्यवर्गीय नारी अपने स्वातंत्र्य एवं अस्तित्व को लेकर अत्यंत सजग है। मध्यवर्गीय नारी के इस अतिसजगता ने उसमें असुरक्षितता का भाव एवं अहं भाव को बढ़ावा मिला है। सुजाता को जो स्वातंत्र्य मिलता है वह पूरा नहीं, इसी वजह से उसमें एक विरोध की भावना दिखाई देती है। इस संदर्भ में सुजाता प्रिंसेस अपर्णा से कहती है- ''आप अभी निम्नमध्यवर्गीय परिवारों की हालत नहीं जानती। दिन छिपे के बाद लड़की को कहीं देर हो जाए तो मुसीबत हो जाती है, दिन में तो जहाँ

चाहिए चलिए।''[6] इससे स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग एक ओर तो आधुनिक होने का दावा करता है लेकिन अब भी वह अपने पुराने रूढ़ि, संस्कारों एवं रीतियों को छोड़ने को तैयार नहीं है।

इस उपन्यास में अध्यापक और उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों के स्थिति का भी चित्रण है। कॉलेज में छात्र एवं अध्यापकों की स्थिति उनके विचार, उनकी नैतिकता-अनैतिकता का चित्रण संकेत रूप में किया है। उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाला उदय का मित्र भुलायमसिंह जो बी. कॉम में पढ़ रहा है लेकिन एक पेपर न आने पर वह हिरो बनने के लिए शहर चला आता है। लेखक ने मुलायमसिंह को आज के युवकों की आकांक्षाओं, निराशा, पलायन की वृत्ति आदि के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है।

राजेंद्र यादव ने इस उपन्यास में उच्च-मध्यवर्गीय परिवार तथा उनके खोखलेपन का अंकन प्रिंसेस अपर्णा के द्वारा किया है। अपर्णा के रहन-सहन द्वारा उच्च-मध्यवर्गीय जीवन पद्धति को हम समझ सकते हैं। जैसे- ''बड़ा भारी दरवाजा खुला तो शानदार ड्रॉइंग रूम सामने था। दुनिया भर के कोच, कुर्सियाँ, मेजें, सजावट की चीजें, दीवारों पर लगे पथराई निस्तेज आँखों से घूरते शेर, बारहसिंघों और हिरणों के सिर, सुनहरे चौखटोंवाली आदमकद पेंटिंग्स। भीतर कदम रखा तो पाँव कालीन में टखनों तक घुस गया।''[7] उनके कालीन इतने मुलायम है लेकिन उनका जीवन उतना ही खुरदरा याने अपमान, निशाबोध, अकेलापन, अलगावबोध एवं खोखलापन भरा हुआ है। अपर्णा को सुख-सुविधाएँ होने पर भी मन की शांति नहीं है। वह अकेलेपन, अलगावबोध, घुटन, निराशा की भावना से पीड़ित है। वह अपने पति के अत्याचारों द्वारा पीड़ित है। लेखक ने यहाँ उच्चमध्यवर्गीय परिवारों के पुरुषों के झूठे अहं एवं टूटते दांपत्य जीवन की यंत्रणा को व्यक्त किया है। अपर्णा आधुनिक नारी है। वह अत्याचारों का विरोध कर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पति का साथ छोड़ देती है और अकेली रहती है। आज मध्यवर्गीय परिवार बाहर से तो सुरक्षित एवं सुखी दिखाई देते हैं लेकिन अंदर से दुःखी, अशांत एवं विघटित बनते जा रहे हैं।

अतः राजेंद्र यादव ने 'शह और मात' उपन्यास में मध्यवर्ग को उसकी शक्ति और सीमा के साथ उपस्थित किया है। मध्यवर्गीय परिवार और व्यक्ति स्तर पर होनेवाले बिखराव एवं टूटन को उन्होने प्रामाणिक रूप से उद्घाटित किया है। 'शह और मात' उपन्यास में मध्यवर्गीय

जीवन की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का यथार्थ अंकन किया है। उदय और मुलायमसिंह के द्वारा मध्यवर्गीय युवकों की अर्थाभाव, बेरोजगारी एवं मकान की समस्याओं को चित्रित किया है। मध्यवर्ग ने आज अर्थ को सबसे अधिक महत्त्व प्रदान किया है। अर्थ को केंद्र बनाकर मध्यवर्ग उसके इर्द-गिर्द घूमता नजर आता है। राजेंद्र यादव ने मुंबई जैसे महानगर का चित्रण कर वहाँ के मध्यवर्गीय जीवन, महानगरीय क्रूरता, घटते मानवी मूल्य, बढ़ती अनैतिकता को महानगर किस तरह कुरेदता है, मध्यवर्ग को किस तरह से अभिशापित जीवन जीने के लिए मजबूर करता है उसका भी चित्रण है। इस उपन्यास में आधुनिक मध्यवर्गीय युवतियों का जीवन, प्रेम विषयक मान्यता, विवाह विषयक दृष्टिकोण, जीवन के प्रति दृष्टिकोण को चित्रित कर मध्यवर्गीय नारी की स्थिति एवं मध्यवर्गीय नारी में आ गई विरोध एवं विद्रोह की भावना को व्यक्त किया है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति में बढ़ रहे अलगाव की भावना, अजनबीपन, अकेलापन, अहं की भावना, द्वंद्व, हीनताबोध को भी पात्रों द्वारा 'शह और मात' में व्यक्त किया है। टूटते दांपत्य जीवन एवं-प्रेम का व्यावहारिक, व्यावसायिक रूप, असफल प्रेम की पीड़ा को यथार्थ के धरातल पर इस उपन्यास में चित्रित किया है। अतः 'शह और मात' उपन्यास में लेखक, डॉक्टर, उच्च शिक्षा पानेवाले छात्र, धनी लोग, अध्यापक, सरकारी कर्मचारी आदि मध्यवर्गीय सदस्यों एवं उनके जीवन पद्धति को चित्रित किया है।

3.2 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप -

स्वातंत्र्योत्तर भारत के मध्यवर्गीय नर-नारियों का जीवन, उनकी आशाएँ, महत्त्वकांक्षाएँ और उनकी निरशा में आत्मपीड़न, घुटन, संत्रास, उब, अकेलापन, विसंगति, अलगावबोध और तनाव का अंकन करने में मोहन राकेश सफल रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में मध्यवर्गीय जीवन का सबसे सशक्त एवं यथार्थ रूप में चित्रण मोहन राकेश के उपन्यासों में मिलता है। अपने उपन्यासों में पूरी ताकत के साथ मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं समस्याओं को उभारा है।

मध्यवर्ग की समस्याओं एवं जीवन का यथार्थ रूप में एवं संवेदनात्मक चित्रण मोहन राकेश के उपन्यासों में मिलता है। इसका प्रमुख कारण है- मोहन राकेश खुद मध्यवर्गीय परिवार में पले-बढ़े और मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों एवं पीड़ा सहे हैं। उनके उपन्यास में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन उनकी अपनी भोगी हुई अनुभूति की वाणी है। मध्यवर्गीय जीवन समस्या

एवं संघर्ष का जितना यथार्थ एवं संवेदनक्षम चित्रण मिलता है वह अन्य किसी हिंदी रचनाकारों के रचनाओं में नहीं मिलता है।

मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन का दस्तावेज है। इस उपन्यास में मध्यवर्ग के अंतर्गत आनेवाले अध्यापक, कलाकार, पत्रकार, चित्रकार, राजनीतिज्ञ, प्रशासकीय सेक्रेटरी, उद्योगपति, कार्यालयीन कर्मचारी, समाचार पत्र के संपादक, उपसंपादक, होटल मालिक आदि सदस्यों का चित्रण है। इस उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्ग का चित्रण है, जिसमें एक ओर मध्यवर्ग का पुरातनता को छोड़ने का आग्रह, तो दूसरी ओर आधुनिकता के पीछे भागने की छटपटाहट। यह द्वंद्व 'अंधेरे बंद कमरे' में स्पष्ट लक्षित होता है। इस उपन्यास में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के संदर्भ में मंजुला गुप्ता लिखती हैं- ''इस अस्तित्व को उभारने के संघर्ष में लेखक ने महानगर में रहनेवाले मध्यवर्ग के पारिवारिक विघटन दांपत्य जीवन की दरारें, खोखली संस्कृति, नए-पुराने मूल्यों के द्वंद्व को सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों के बीच उघाड़ा है।''[8] अतः आज भारतीय मध्यवर्ग पाश्चात्य आधुनिकता का अंधाधुंध अनुकरण कर रहा है जिसके परिणामस्वरूप यह वर्ग न अपने संस्कारों से ही निष्कृति पा सका है न आधुनिकता को समग्र रूप में अपना सका है। उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र मधुसूदन, हरबंस, नीलिमा, शुक्ला, सुरजीत, शिवमोहन, पॉलेटिकल सेक्रेटरी, उद्योगपति, उमादत्त, मैनेजर आदि मध्यवर्ग से संबंध रखते हैं। हरबंस एक कॉलेज में इतिहास का अध्यापक है। उसकी आय का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन उसका रहन-सहन उच्च स्तर का है। हरबंस की पत्नी का नाम है- नीलिमा जो उच्चशिक्षित तथा मध्यवर्गीय परिवार से संबंध रखती है। हरबंस अध्यापक होकर भी आर्थिक अभावों का सामना उसे करना पड़ता है।

नीलिमा और हरबंस का प्रेम-विवाह हुआ है लेकिन उनका वैवाहिक जीवन तनाव एवं अशांतता से भरा हुआ है। मोहन राकेश ने इन दोनों के दांपत्य जीवन के द्वारा महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय दांपत्यों की विघटन की प्रक्रिया तथा तनाव एवं संघर्ष को स्पष्ट किया है। नीलिमा और हरबंस में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सामंजस्य, विश्वास, आदर का अभाव है। दोनों हर समय एक-दूसरे को दोष देते हैं। उनका दांपत्य जीवन टूटने का प्रमुख कारण है- दोनों का अहं। हरबंस नीलिमा को पहले बहार की दुनिया से जोड़ता है। उसमें आशाएँ, आकांक्षाएँ निर्माण करता

है। यह सब वह अपने अहं का पोषण करने के लिए खुद को आधुनिक एवं प्रतिष्ठित दिखाने के लिए, लेकिन जब उसके अहं को ठेस पहुँचती है तो वह उसका बाहर जाना, अन्य लोगों से मिलना आदि का विरोध करता है। हरबंस के व्यक्तित्व दूवारा राकेश ने मध्यवर्गीय पुरुषों की रूढ़िवादी मानसिकता, अहं की भावना, खोखले विचारों को व्यक्त किया है। हरबंस-नीलिमा एक ही परिवार में, एक ही छत में रहकर एक-दूसरे से कटे-कटे रहते हैं। दोनों में अकेलापन, अलगावबोध, अजनबीपन, घूटन की पीड़ा दिखाई देती है। हरबंस एक जगह कहता है- ''मुझे लगता है जैसे मैं दुनिया से बिल्कुल कट गया हूँ और अपने में बिल्कुल अकेला हूँ। हर नया आदमी मुझे बिल्कुल अपरिचित दुनिया का आदमी लगता है और मैं उससे अपने अंदर की कोई चीज नहीं बाँट सकता।''[9] यह पीड़ा केवल हरबंस की नहीं है तो आज के प्रत्येक मध्यवर्गीय व्यक्ति की पीड़ा है। हरबंस-नीलिमा में अनबन है। दोनों एक-दूसरे को दुःख देने का प्रयास करते हैं, फिर भी दोनों एक साथ जीने के लिए या रहने के लिए अभिशप्त हैं। हरबंस कहता है- ''तुम्हारे साथ और तुम्हारे बिना दोनों ही तरह की जिंदगी मुझे असंभव-सी प्रतीत होती है।''[10] इसके दूवारा मोहन राकेश ने आज के महानगरों में रहनेवाले दांपत्यों की अभिशप्त नियति को स्पष्ट किया है। आज महानगरों में पति-पत्नी मजबूरन रिश्ता निभाते दिखाई देते हैं।

हरबंस और नीलिमा के संबंधों में तनाव निर्माण होने का कारण केवल हरबंस नहीं है। नीलिमा उच्च शिक्षित है। वह आधुनिक विचारों की नारी है। वह अपने निजी एवं अस्तित्व को लेकर सजग रहती है। उसने इच्छा के अनुसार हरबंस के साथ प्रेम-विवाह किया है। प्रेम-विवाह होने के बाद भी वह सुखी जीवन बीता नहीं पाती है क्योंकि उसकी अपनी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ हैं। नीलिमा अपने अहं के कारण ही हरबंस के साथ सामंजस्य स्थापित कर नहीं पाती। वह बहुत नाम कमाना चाहती है। स्वतंत्र जीवन बिताना चाहती है। नीलिमा को उच्चवर्गीय जीवन के प्रति आकर्षण है। वह कुछ दिन पेंटिंग्ज बनाती, कुछ दिन नृत्य करती है। विदेश आकर्षण के कारण नृत्य प्रदर्शन के लिए विदेश जाती है, लेकिन उसका नृत्य प्रदर्शन असफल रहता है। उस असफलता के लिए वह हरबंस को दोषी ठहराती है। मोहन राकेश ने नीलिमा के माध्यम से मध्यवर्गीय नारी की दिशाहीनता, फॅशन तथा आधुनिकता के नाम पर गलत रास्तों का चुनाव आदि का चित्रण किया है।

नीलिमा स्वातंत्र्य का गलत अर्थ निकालकर वह सिगार पीती है। नशापान करती है, अन्य पुरुषों के साथ घूमती है। पार्टियों में जाती है। पेलिटिकल सेक्रेट्रियों को खाने पर घर बुलाती है, घर की आर्थिक हालत खराब होकर भी उच्च होने का आभास देना चाहती है। इस खोखलेपन के कारण ही हरबंस और नीलिमा में हर वक्त झगड़ा हो जाता है। इस उपन्यास के मध्यवर्गीय खोखलेपन के संदर्भ में डॉ. नेमिचंद्र जैन लिखते हैं- ''बेकारी, मध्यवर्गीय नैतिकता, अनैतिकता, अर्थगत वर्ग संघर्ष, युवकों की स्थिति, अभिजात्य वर्ग की स्नाबरी, फैशनपरस्ती, जीवनमूल्यों का विघटन, यहाँ तक कि राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय दाँवपेंच और आज की राजनीतिक, कूटनीति सभी का समावेश करके लेखक ने इस उपन्यास में निकटतम वर्तमान जीवन को अपने युग की समग्रता और सजीवता के साथ खड़ा कर दिया है। समष्टिगत व्यक्ति चेतना और अर्थगत अधार पर खड़ा करके उसकी एक-एक पर्त, उसका एक-एक रेशा उकेर कर रख दिया है।''[11] यह कथन 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास के उद्देश्य को दर्पण की तरह प्रस्तुत करता है।

मधुसूदन एक पत्रकार है जो अपनी आर्थिक दुरावस्था के कारण गाँव को छोड़कर शहर में आया है। बेरोजगारी के कारण उसे मुंबई, दिल्ली जैसे महानगरों में दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। अर्थाभाव के कारण मुंबई के गंदी गलियों में रहना पड़ता है। बेरोजगारी उसका पीछा नहीं छोड़ती है। संपादक उसको सिर्फ आशा दिखाते हैं लेकिन नौकरी नहीं देते हैं और नौकरी मिलती भी है तो कम आय की, जिससे महानगरों में गुजारा नहीं हो सकता है। मुंबई जैसे महानगर की भीषणता एवं गतिमानता एवं होड़ के संदर्भ में मधुसूदन कहता है- ''इस होड़ में हर व्यक्ति हर दूसरे व्यक्ति का प्रतिद्वंद्वी है। हर एक के साथ युद्ध है। हर का घर उसकी अपनी गजनी है...।''[12] स्पष्ट होता है कि महानगरों में प्रतियोगिता या स्पर्धा ने मानव में से मानवता, संस्कारों को नष्ट किया है। स्वार्थ के लिए लोग दूसरे लोगों का जीवन बरबाद करने पर उतारू हो गए हैं। मोहन राकेश ने मधुसूदन के माध्यम से मध्यवर्गीय पत्रकार की महानगरों में दुर्दशा एवं संपादकों द्वारा होनेवाला शोषण, उनकी अर्थाभाव के कारण होनेवाली बुरी हालत को व्यक्त किया है। मधुसूदन अपने कार्य के प्रति ईमानदार होकर भी उसे उसका फल मिलता है- आजीवन की भटकन। इसी वजह से ही वह मुंबई, दिल्ली और लखनऊ जैसे शहरों में भटकता रहता है, फिर भी उसका जीवन स्थिर नहीं हो पाता है। दूसरी ओर सुरजीत है जो संपादक से लेकर राजनीतिज्ञों तक संबंध

रखता है। साठ-गांठ के द्वारा गबन करके आराम का जीवन बिताता है। मोहन राकेश ने पोलिटिकल सेक्रेटरी तथा समाचार पत्रों के संपादकों द्वारा राजनीति और समाचार पत्र किस तरह से मिले-जुले हैं, इसमें कितना भ्रष्टाचार चल रहा है, आज समाचार पत्र किस प्रकार से धनी लोगों के गुलाम हो गए हैं इसका चित्रण भी इस उपन्यास में किया है।

इस उपन्यास में शुक्ला, सुरजीत, शिवमोहन, जीवन भार्गव आदि मध्यवर्गीय पात्रों के जीवन का भी चित्रण है। शुक्ला सुरजीत के साथ अनैतिक संबंध रखती है, जिसे बाद में मजबूरन सुरजीत के साथ शादी करनी पड़ती है, जिसकी पहले ही दो शादियाँ हो चुकी हैं। उमादत्त जो नृत्य का ट्रुप चलाता है उसकी आर्थिक स्थिति, स्वार्थी भावना तथा कलाकारों का शोषण आदि का चित्रण, पोलिटिकल सेक्रेटरी के नीति तथा स्वार्थी वृत्ति का चित्रण किया है जो उच्च-मध्यवर्ग के अंतर्गत आता है। उसका रहन-सहन तो ऊँचे स्तर का है, लेकिन कार्य नीचे स्तर के करता है। इसके अलावा सरकारी कार्यालयों तथा समाचार पत्रों में काम करनेवाले कर्मचारी, फोटोग्राफर, संवाददाता आदि मध्यवर्ग के लोगों का भी चित्रण इस उपन्यास में संकेत रूप में मिलता है।

उपन्यास में सुषमा श्रीवास्तव के माध्यम से मध्यवर्गीय आधुनिक युवतियों की दिशा एवं दशा का अंकन किया है। सुषमा आधुनिक युवती है जो नारी स्वातंत्र्य एवं अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। वह अपने स्वातंत्रता को बनाए रखने के लिए आर्थिक स्वावलंबी बनती है। सुषमा एक श्रेष्ठ पत्रकार भी है। वह पत्रकारिता से ज्यादा अन्य कार्यों के कारण ख्याति प्राप्त करती है। वह अनेक पुरुषों से मित्रता बनाए रखती है। वह अपने अस्तित्व को बचाना चाहती है, लेकिन अंत में हारकर मधुसूदन से शारीरिक संबंध रखती है। मोहन राकेश ने सुषमा के माध्यम से मध्यवर्गीय युवतियों पर हो रहा पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव एवं उच्च शिक्षा पाकर भी दिशाहीन होना, स्वतंत्रता के नाम पर अनैतिक कार्यों का बढ़ता हुआ प्रभाव आदि का यथार्थ अंकन किया है।

अतः यह उपन्यास दिल्ली जैसे महानगर में रहनेवाले पत्रकार मधुसूदन और मध्यवर्गीय परिवार हरबंस और नीलिमा के आशा-आकांक्षाओं, मिलन, बिछुड़न और ऐसे ही कितपथ अन्य संदर्भों से प्रस्तुत तनाव भरे समस्याओं का आलेख है। इस आलेख में महानगरीय जिंदगी के नैतिक, सांस्कृतिक और कलाजगत के अधिकांश प्रतिमान भी स्पष्ट हुए हैं। इसमें आज के मध्यवर्गीय जीवन तथा युग की संवेदना, पीड़ा, अलगाव, अकेलापन, अजनबीपन और घुटन

को हरबंस-नीलिमा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। महानगरों में जीवन जीनेवाले पत्रकार, अध्यापक, संपादक, कलाकार, फोटोग्राफर, चित्रकार, राजनीतिज्ञ, सेक्रेटरी, नीजि कार्यालयों के कार्य करनेवाले कर्मचारी आदि मध्यवर्गीय सदस्यों के आर्थिक दुरावस्था, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी, दांपत्य जीवन का टूटन, मानसिक द्वंद्व, नारी जीवन, अनैतिक संबंध, पाश्चात्य संस्कृति एवं फैशनपरस्ती का बढ़ता प्रभाव आदि को मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' में यथार्थ रूप में पूरी संवेदना के साथ चित्रित किया है। अतः मध्यवर्गीय परिवार तथा उनकी समस्याएँ, जीवन का स्वरूप आदि का चित्रण करने में यह कृति सफल हुई है।

3.3 निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप -

निर्मल वर्मा समकालीन हिंदी साहित्य के शीर्षस्थ लेखकों में से एक हैं। निर्मल वर्मा ने आधुनिक मानव की स्थिति एवं अभिशप्त नियति को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। निर्मल वर्मा के संदर्भ में गोपाल राय लिखते हैं- ''निर्मल वर्मा मुख्यतः अवसाद, निराशा, अलगावबोध, संत्रास भाव और मन की अंधकारभरी गुफाओं में भटकनेवाली चेतना के उपन्यासकार हैं।''[13] स्पष्ट है निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में आधुनिक मानव की अकेलेपन, अलगावबोध, द्वंद्व, घुटन की भावना को अस्तित्ववादी शैली में प्रस्तुत किया है।

निर्मल वर्मा के अब तक चार उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उनका पहला उपन्यास 'वे दिन' (1964) व्यक्तिवादी उपन्यास है, जो मध्यवर्गीय शहरी मानसिकता से युक्त है। इस उपन्यास के संदर्भ में पारूकांत देसाई लिखते हैं- ''वे दिन युरोप की महायुद्धोत्तर नई दिशा-हारा पीढ़ी के संत्रास, घुटन, तनाव, मूल्यहीनता, अर्थहीनता और उसके रीतीपन को रूपायित करनेवाला उपन्यास है।''[14] इस उपन्यास में मध्यवर्ग के सदस्यों का विभाजन करते समय दो भागों में करना होगा। एक तो भारतीय मध्यवर्ग जिसमें विदेश में स्कॉलशिप पर शिक्षा लेनेवाला उपन्यास का नायक 'मैं' (इंदी) तो दूसरा पाश्चात्य मध्यर्गव, जिसमें फ्रान्ज, मारिया, रायना, टी.टी., टुरिस्ट, कंपनी का मालिक, होस्टल के अन्य छात्र, कर्मचारी आदि आते हैं। वैसे इस उपन्यास का पूरा वातावरण अभारतीय है। विदेशी मध्यवर्ग के आय, शिक्षा, रहन-सहन, आर्थिक स्थिति के आधार पर उन्हें मध्यवर्ग के अंतर्गत रखा है जिसमें से कुछ पात्र उच्च-मध्यवर्ग के अंतर्गत भी आते हैं।

'वे दिन' उपन्यास में क्रिसमस के चंद शांतिपूर्ण दिनों की कथा है। इसमें उन्होंने आधुनिक मनुष्य की विडंबनात्मक नियति एवं विवशता का अंकन अस्तित्ववादी शैली में किया है। 'वे दिन' आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन संवेदना से युक्त उपन्यास है। पश्चिम के अर्थहीन परिवेश में जिस छोटे सुख की तलाश उपन्यास में की गई है वह आधुनिक संदर्भ में अप्रासंगिक नहीं है, कारण तीन दिन के संपर्क में 'रायना' और 'मैं' के शरीरी सुख रोमांटिक अर्थ में प्रेम नहीं बल्कि रोमानी प्रेम से अलग प्रेम की आधुनिकतावादी कल्पना है। अंत में रायना के प्रति मोह उसमें उत्पन्न होता है, वह भावुकता न होकर 'मैं' का बचा हुआ मनुष्य है, जिससे वह अलग हो गया है।

'वे दिन' का नायक 'मैं' (इंदी) एक मध्यवर्गीय युवक है। वह अपनी 'मेडिकल' की शिक्षा पूरी करने के लिए स्कॉलरशिप लेकर विदेश में पढ़ने गया है। निर्मल वर्मा में 'मैं' को प्रतिनिधि बनाकर विदेश में शिक्षा प्राप्त करनेवाले मध्यवर्गीय भारतीय छात्रों की स्थिति एवं कठिनाइयों को यथार्थ रूप में अंकित किया है। 'मैं' को प्राग में अर्थाभाव, बेरोजगारी, मानसिक उलझन एवं तनाव जैसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपने आर्थिक दुरावस्था के संदर्भ में 'मैं' कहता है- ''सर्दी के उन दिनों में टूरिस्टों के साथ बाहार भटकने की संभावना मुझे ज्यादा आकर्षक नहीं जान पड़ी। लेकिन इनकार करने का मुँह नहीं था। उन दिनों स्कॉलरशिप की रकम बहुत पहले खत्म हो जाती थी। हर विद्‌यार्थी छुट्‌टियों में कोई-न-कोई काम ढूँढ़ लेता था। मैं अब तक चलता आया था लेकिन मुझे लगा, अब ज्यादा दिन इस तरह नहीं चल सकेगा।''[15] इससे स्पष्ट होता है कि अर्थाभाव के कारण ही मैं को छुट्‌टियों में नौकरी करनी पड़ती है- वही स्थिति टी. टी. तथा होस्टल के अन्य छात्रों की है।

लेखक ने यहाँ भारतीय मध्यवर्गीय युवक को विदेश में बेरोजगारी एवं अर्थाभाव की मार को सहते दिखाया है। 'मैं' विदेश में जाकर अपने घर, देश एवं परिवेश से कट चुका है। निर्मल वर्मा ने मध्यवर्गीय युवकों के परिवर्तन को स्पष्ट किया है। यह युवक विदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए तथा नौकरी करने के लिए जाते हैं और बाद में वहीं बस जाता है। वह न घर लौटता न देश। उसे न घर की याद आती है न चिंता होती है। आज इस तरह से मध्यवर्गीय समाज में पारिवारिक विघटन की क्रिया शीघ्रता से हो रही है। मध्यवर्गीय युवक अपने घर से कटते जा रहे हैं। 'मैं' का यह कथन इस बात को पुष्टि देता है- ''मैं घर के बारे में नहीं सोचता। मैं सोचता हूँ, एक

उम्र के बाद तुम घर वापस नहीं जा सकते, जैसे तुमने उसे छोड़ा था।''[16] इससे स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय युवकों में तथा व्यक्तियों में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण बढ़ रहा है।

उपन्यास में 'मैं' ही सिर्फ अपने घर से नहीं कट गया तो रायना, मीता, फ्रान्ज, मारिया, टी. टी. सभी अपने घर से कट गए हैं तथा उनमें अलगावबोध की भावना नीहित है। 'मैं' अकेलेपन, अलगावबोध, अजनबीपन की भावना से पीड़ित है। 'मैं' रायना के साथ अनैतिक शारीरिक संबंध रखता है। निर्मल वर्मा ने मध्यवर्गीय युवक एवं युवतियों में बढ़ती यौन भावना को 'मैं' एवं रायना के माध्यम से किया है। निर्मल वर्मा स्वस्थ जीवन के लिए सेक्स के समर्थक हैं, इसी वजह से हमें 'मैं' (इंदी) और उसके होस्टल के छात्रों में सेक्स के प्रति आकर्षण दिखाई देता है तो दूसरी ओर रायना मुक्तभोग को प्रधानता देती है, फ्रान्ज और मारिया भी शादी से पूर्व शारीरिक संबंध रखते हैं। 'मैं' विदेश में जाकर नशापान भी करता है।

निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में शहरी मध्यवर्गीय मानसिकता का चित्रण किया है, लेकिन वह भारतीय मध्यवर्ग का नहीं। 'वे दिन' में पाश्चात्य मध्यवर्गीय जीवन के स्वरूप का चित्रण रायना, फ्रान्ज, मारिया, टी.टी. और टूरीस्ट कंपनी के मालिक द्वारा किया है। भारतीय मध्यवर्ग एवं पाश्चात्य मध्यवर्गीय जीवन में, उनकी रहन-सहन में, आर्थिक स्थिति में, उनकी आय में अंतर है। पाश्चात्य मध्यवर्गीय व्यक्तियों का जीवनविषयक दृष्टिकोण अलग है। उनमें हमें घोर अनैतिकता, व्यक्तिवाद एवं अस्तित्व के विचार लिए हुए चलते मानव दिखाई देंगे जो सुख-सुविधाओं के भोगते हुए भी अस्थिर, तनाव एवं घूटन में जीवन बीता रहे हैं। उनका जीवन विषयक दृष्टिकोण भौतिकवादी है। वह अपने 'स्व' को छोड़कर कुछ भी नहीं सोचते हैं। जीवन में सिर्फ उन्मुक्त भोग को प्रधानता देते हैं। विदेशी मध्यवर्ग पूरी तरह से आधुनिक बन रहा है तो भारतीय मध्यवर्ग सिर्फ आधुनिक होने का दावा करता है लेकिन आज भी अपनी संस्कृति एवं रीति-रिवाजों से जकड़ा हुआ है। वह आधुनिक बना है सिर्फ बाहर से जैसे फॅशन करना, उसमें कपड़े द्वारा, अंगप्रदर्शन द्वारा, विविध नशा द्वारा लेकिन उन्होंने अपने विचारों को आधुनिक नहीं बनाया है। आज भी जाति-पाति के बंधनों में जकड़े दिखाई देते हैं।

रायना, फ्रान्ज, मारिया, टी. टी. यह पात्र व्यक्तिवादी या अस्तित्ववादी विचारधारा के पात्र हैं। रायना के आर्थिक स्थिति तथा शिक्षा का उपन्यास में कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी

उसके रहन-सहन, विदेशी यात्रा करने की आदत से उसे हम उच्च-मध्यवर्ग के अंतर्गत रख सकते हैं। रायना अपने पति जाक द्वारा परित्यकता युवती है। पति से प्रताड़ित होने पर भी वह दुःखी नहीं होती है। वह स्वतंत्र विचारों एवं व्यक्तिगत अस्तित्व को सजगता से लेनेवाली नारी है। वह मुक्तभोग में विश्वास रखती है। वह अनेक पुरुषों से संबंध रखती है। यौन आकर्षण उसमें अधिक है इसके तृप्ति के लिए वह नैतिकता-अनैतिकता का प्रश्न बीच में नहीं लाती है। हर वक्त वह छोटे-सुख के लिए दौड़ती रहती है। इस छोटे सुख ने रायना में एक भटकन पैदा की है जो एक शहर से एक पुरुष, दूसरे शहर से दूसरे पुरुष तक पहुँचाती है।

रायना के माध्यम से निर्मल वर्मा ने पाश्चात्य मध्यवर्गीय युवतियों की उन्मुक्तता को व्यक्त कर उनमें बढ़ रहे अलगावबोध एवं अकेलेपन को व्यक्त किया है। रायना का दांपत्य जीवन टूटा हुआ एवं अशांत है। रायना विवाह को अपने स्वतंत्र जीवन में बाधक मानती है। फलस्वरूप जाक को छोड़ देती है। वर्मा ने विदेश में तीव्रता से हो रही पारिवारिक विघटन की क्रिया एवं उसका असर किस तरह से उनके खुद के जीवन पर, उनके बच्चों पर, परिवार और समाज पर हो रहा है इसका यथार्थ चित्रण 'वे दिन' में किया है। रायना विवाह तथा परिवार का विरोध करती है। वह अस्तित्ववादी विचारों की नारी होने के कारण सिर्फ़ खुद के सुख के बारे में सोचती है। यह सुख की तलाश उसमें एक रिक्तता एवं घुटन पैदा कर देता है और इस पीड़ा को लेकर जीने में वह अभिशप्त है। इन सारी यंत्रणा के पीछे है महायुद्ध की अभिशप्त नियति हमें दिखाई देती है जिससे पाश्चात्य मध्यवर्गीय जीवन पूरी तरह से बिखर गया है। जिसके कारण पाश्चात्य देशों में सामाजिक सद्भाव, सांस्कृतिक आदर्शों का विनाश हो रहा है।

फ्रान्ज को भी पूर्वी जर्मन से प्राग के सिनेमा स्कूल में अध्ययन करने के लिए स्कॉलरशिप मिला था। मारिया जर्मन एम्बोसी में कार्य करती है। फ्रान्ज और मारिया भी मध्यवर्ग से संबंध रखते हैं। दोनों एक साथ रहते हैं, शादी से पूर्व शारीरिक संबंध रखते हैं लेकिन विवाह या शादी के बंधन को नकारते हैं। दोनों में भी डर, अजनबीपन, अकेलापन एवं अहं की भावना दिखाई देती है। दोनों मुक्त विचार एवं मुक्त भोग को अधिक महत्त्व देते हैं। उपन्यास में टी. टी. 'मैं' का मित्र जो उच्च शिक्षा पाने के लिए प्राग आया है। टूरिस्ट एजन्सी के मालिक के जीवन का सिर्फ संकेत है।

अंतः निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' उपन्यास में शहरी मध्यवर्गीय व्यक्तियों की स्थिति एवं नियति को स्पष्ट किया है। इसमें उन्होने भारतीय मध्यवर्गीय परिवार का छात्र 'मैं' (इंदी) द्वारा विदेश में शिक्षा प्रात कर रहे भारतीय मध्यवर्गीय छात्रों की बेरोजगारी, आर्थिक दुरावस्था, परिवार से कट जाना और मानसिक अस्थिरता को व्यक्त किया है। उपन्यास का वातावरण अभारतीय होने के कारण विदेशी मध्यवर्गीय जीवन की घुटन भरी जिंदगी, अकेलापन, अविरल भटकन एवं अशांतता को व्यक्त किया है। इसमें उन्होने उच्च शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र, धनी लोग, उद्योगपति का चित्रण कर उनकी जीवन शैली, आर्थिक स्थिति एवं उन्मुक्त भोग की भावना को व्यक्त किया है।

3.4 मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में चित्रित मध्यवर्ग का स्वरूप -

आधुनिक महिला कथाकारों में बहुमुखी प्रतिभा की धनी रचनाकार मन्नू भंडारी ने अपने साहित्य द्वारा नारी जीवन की व्यथा-कथा, सामाजिक और आधुनिक जीवन की समस्याओं को आधार बनाकर तलाक और पुनर्विवाह की समस्या, प्रेम त्रिकोण की समस्या, मानवीय भावनाओं जैसे मन की जटिलता, अकेलापन आदि को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। आधुनिक महिला लेखिकाओं के संदर्भ में कुसुम शर्मा लिखती हैं- "साठोत्तर हिंदी उपन्यास का युग वस्तुतः प्रयोग का युग रहा है। साठ के बाद आधुनिक बोध और भी गहरा होने लगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखिकाएँ अपने साहित्य में आधुनिकता को, मानवीय भावनाओं को उनके समस्याओं को अधिक गहराई में जाकर खुलेपन से चित्रित करने में सफल रही हैं।"[17] मन्नू भंडारी ने भी अपने उपन्यासों में आधुनिक राजनीतिक समस्याओं और मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं का अंकन किया है।

मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' हिंदी की महत्त्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध कथाकृतियों में से एक है। इसमें उन्होने मध्यवर्गीय परिवार की विघटन की प्रक्रिया एवं दांपत्य जीवन के असमंजस्य के कारण पति-पत्नी के बीच में पीड़ा झेलते हुए बालक का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में पारूकांत देसाई लिखते हैं- " 'आपका बंटी' लेखिका का प्रथम महत्त्वपूर्ण एवं बहुचर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास इस नकली आधुनिकता से युक्त आज की महानगरीय जिंदगी के पहलू की तिखी वास्तविकता का सही बोध करनेवाला उपन्यास है। हिंदी का यह पहला

उपन्यास है, जिसमें एक विशेष परिस्थिति में पड़े हुए बच्चे की मनःस्थिति का इतने विस्तृत फलक पर आकलन किया है।''[18] इस उपन्यास में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार की संघर्षपूर्ण स्थिति एवं मध्यवर्गीय व्यक्तियों में बढ़ती अहं की भावना के परिणामों का अंकन किया है। 'आपका बंटी' में चित्रित स्थितियों के संदर्भ में चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते हैं- ''आधुनिक जीवन के कुछ सीमा तक व्यापक, गहन एवं वास्तविक संदर्भ में अत्यंत संवेदनशील व्यक्तियों को एक-दूसरे से टकराते, जुड़ते-टूटते और तोड़ते दिखाकर मन्नू भंडारी ने हमारी जीवन की समझ को अधिक समंजस्य, अधिक व्यापक, अधिक गहन और प्रौढ़ बनाने का यशस्वी प्रयत्न किया है।''[19] इस उपन्यास में बंटी के व्यक्तित्व के अत्याधिक जटिल, कुंठित एवं उलझनपूर्ण बनते जाना और उसकी आंतरिकता में वेदनामय अकेलेपन की संत्रासपूर्ण रिक्तता की, जीवन को एक बोझ रूप में ढोते रहने की विवशता की स्थितियों का क्रमिक एवं कलात्मक अंकन है।

'आपका बंटी' उपन्यास में मध्यवर्ग के अंतर्गत आनेवाले प्रिंसिपल, मॅनेजर, डॉक्टर, अध्यापक, वकील, शासकीय कर्मचारी आदि का चित्रण है। इसमें चित्रित मध्यवर्ग महानगरों में जीवन बीतानेवाला है। उपन्यास का प्रमुख पात्र शकुन एवं अजय पति-पत्नी हैं। शकुन कॉलेज में प्रिंसिपल है तो अजय कलकत्ते में डिविजनल मॅनेजर के पद पर काम करता है। शकुन और अजय का प्रेम-विवाह हुआ है लेकिन कुछ ही सालों में दोनों के दांपत्य जीवन में दरार आ जाती है। शकुन और अजय के दांपत्य जीवन टूटने का कारण है- दोनों में सामंजस्य, लगाव, सौदाहर्य, प्रेम का अभाव। दोनों में अहं की भावना नीहित है। इसी अहं भाव के कारण दोनों एक-दूसरे को झुकाना चाहते हैं, पीड़ा देना चाहते हैं। एक-दूसरे को पराजित करने की होड़ में दोनों अशांत एवं दुःखपूर्ण जीवन जीते हैं विशेषतः शकुन। शकुन अजय को पराजित करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लेती है। ''सात वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो जाने के पीछे कहीं अपने को बढ़ाने से ज्यादा अजय को गिराने की आकांक्षा ज्यादा थी।''[20] इसी अहं की वजह से दांपत्य जीवन बिखर जाता है।

अजय को पराजित करने एवं गिराने के प्रयास में शकुन खुद पराजित हो जाती है। अजय से अलग होने पर उसमें एक गहरा अकेलापन छा जाता है। अकेलेपन की यह पीड़ा उसमें घुटन, हीनता एवं अलगावबोध की भावना को निर्माण करती है। अजय और शकुन के दांपत्य

जीवन द्‌वारा महानगरों में जीवन बितानेवाले उच्चशिक्षित एवं उच्च-मध्यवर्गीय परिवार की अशांतता तथा खोखलेपन को रूपायित किया है। मध्यवर्गीय दांपत्य विघटन का प्रमुख कारण है- उनका अहं, सामंजस्य प्रेम, अपनत्व का अभाव। आज दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों में हररोज सेकड़ों दांपत्य अलग हो रहे हैं। तलाक आज के मध्यवर्ग की प्रमुख समस्या बन गई है। अजय और शकुन अपने व्यक्तिगत अहं को पोषित करने के लिए एवं स्वतंत्रता के लिए दोनों अलग हो जाते हैं। दोनों तलाक लेते हैं लेकिन उनके पुत्र बंटी का जीवन दोनों के अहं के कारण नष्ट हो जाता है। उसका जीवन उपेक्षित एवं समस्याओं से भर जाता है। मध्यवर्गीय समाज में बढ़ी तलाक की समस्या ने समाज में बंटी जैसे 'प्रोब्लेम' चाइल्ड की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। आज अर्थप्रधान युग में जहाँ पति-पत्नी नौकरी करनेवाले हैं वहाँ व्यक्तिगत अस्तित्व को लेकर झगड़ते दिखाई देते हैं।

मध्यवर्ग में नारी शिक्षित बन गई है। शिक्षा ने स्त्री वर्ग के व्यक्तित्व को उभारा है। इसी वजह से स्त्री की वैयक्तिक रुचियाँ और महत्त्वकांक्षाओं ने पीरवारिक विघटन में विशेष भूमिका निभा रही है। शकुन आधुनिक नारी है। वह पूर्णतः जागृत है तथा पूर्णतः स्वतंत्र होने की इच्छुक है, जिसके लिए वह आत्मनिर्भर एवं शिक्षित बनती है। वह पारस्परिक विश्वास का सुख एवं दांपत्य जीवन में सामाजिक मान-प्रतिष्ठा चाहती है। आज सभी मध्यवर्गीय नारियों की प्रतिनिधि शकुन बनी है। शकुन और अजय में हमें प्रेम का अभाव भी दिखाई देता है। उन दोनों ने तो प्रेम-विवाह किया था, लेकिन विवाह होने के बाद दोनों में प्रेम का अभाव दिखाई देता है।

आज मध्यवर्ग में प्रेम विवाह को प्रधानता मिल रही है। मध्यवर्गीय युवक युवतियाँ जातिभेद भूल कर प्रेम-विवाह तो कर रहे हैं लेकिन यह प्रेम-विवाह झूठे, नकली एवं कमजोर शापित लगते हैं। वास्तविकता एवं कठिनायों का सामना करने पर प्रेम से बने यह परिवार मोम की तरह गल जाते हैं जैसे शकुन और अजय का घर बह जाता है। एक तरह से आधुनिक नारी के सुखों-दुखों, समस्याओं और संघर्षों को शकुन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के विधान के मूल में आधुनिकता का अभिशाप है। आधुनिक नारी को पहला शाप दुहरे स्तर पर जीवन जीने की बाध्यता है तो दूसरा अभिशाप है अपने व्यक्तित्व के प्रति सजगता के साथ-साथ आत्मसम्मान के प्रति आर्थिक चेतना। दूसरे शब्दों में आधुनिकता अहं को जितना खाद पानी

डालती है, उतना दूसरे के व्यक्तित्व का आदर करने का, सह पाने का भाव पुष्ट नहीं करती है। अजय और शकुन के बीच समझौता नहीं हो सका, उसका कारण है- दोनों में स्थित अहं जो आज मध्यवर्गीय समस्याओं में दिखाई देता है।

भारतीय मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन एक जटिल स्थिति से गुजर रहा है। परिवार के लिए आवश्यक समन्वय वृत्ति एवं सहनशीलता, दूसरे की कमियों के बावजूद उसको रहने का कर्तव्यबोध, धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है और वैयक्तिक स्वततंत्रता तथा व्यक्तिगत सुख पाने की आकांक्षा के टोक अधिक नुकीले बनते जा रहे हैं। साथ-साथ स्थिति को स्तर पर विश्लेषित कर निर्णयों तक पहुँचने की निस्संगता भी हम में अभी नहीं आ पाई है और बहुत कुछ परंपरागत भावुकता हममें शेष है। अतः जीवन में प्रायः झकझोर ने वाली, मथने और विचलित करनेवाली स्थितियाँ बार-बार आती रहती हैं। इस पारिवारिक संदर्भ ने बंटी शकुन के संबंधों को ही नहीं तो आज के मध्यवर्गीय परिवारों में पति-पत्नी, पिता-पुत्र एवं माता-पुत्र के संबंधों को उलझनपूर्ण एवं विचित्र बनाया है।

आधुनिक मध्यवर्गीय नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली शकुन के स्वभाव, वेशभूषा पर फॅशन हावी है। शकुन अपने बालों को कटवाती है। हररोज अपने चेहरे का मेक-अप करती हैं। कॉलेज की अन्य अध्यापिकाओं के साथ घर में तथा बहार छोटी-मोटी पार्टियाँ मनाती हैं। आज मध्यवर्गीय नारियाँ इन मौज-मस्ती तथा फॅशन की ओर सबसे अधिक आकर्षित है, जिसका आनंद उठाने के लिए परिवार की शांति, सुख एवं नैतिकता का विचार नहीं करती हैं।

मध्यवर्ग के अंतर्गत आनेवाला उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र है- डॉक्टर जोशी। डॉ. ज़ोशी की पत्नी का देहांत हो गया है। डॉ. जोशी आधुनिक विचारधारा के पुरुष हैं। उनकी रहन-सहन काफी उच्च्व स्तर की एवं साफ-सुथरी है। अमि और जोत उनकी संतानें हैं। डॉ. जोशी आधुनिक विचारधारा के होने के कारण ही शकुन की जिंदगी का लेखा-जोखा मालुम होने पर भी उसके साथ पुनर्विवाह करते हैं। इस पुनर्विववाह के पीछे प्रमुख कारण है- शकुन और डॉ. जोशी की अतृप्त यौन भावना। शकुन अपने पति अजय द्‌वारा परित्याक्ता एवं अतृप्त पत्नी है जो अपने यौन भूख से डॉ. जोशी की ओर आकर्षित हो जाती है और शकुन का डॉ. जोशी की ओर जाना जायज भी है। आज मध्यवर्ग में इसी बढ़ती यौन भावना तथा सेक्स के कारण अनैतिक संबंधों की

समस्या बढ़ रही है। मध्यवर्ग संस्कृति एवं नैतिकता को भूलकर अनैतिक संबंध रख रहा है। इसके पीछे मूल कारण है- उन्हें मिला आधा-आधूरा व्यक्तिगत स्वातंत्र्य एवं आधुनिकता का परिणाम है। शकुन की तथा अजय की दूसरी शादी मध्यवर्ग के विद्रोही कृति का परिणाम है। वह खुद के अस्तित्व को स्वतंत्र रखना चाहते हैं, उस पर किसी का रोब एवं आधिकार नहीं चाहते हैं। अगर इसके बीच में नाते-रिश्तें आ भी जाते हैं तो इसे ठुकरा देते हैं, या तोड़ देते हैं जैसे शकुन ने किया है।

शकुन अपना अकेलापन दूर करने के लिए पुनर्विवाह करती है। यह पुनर्विवाह रूढ़ीगत मान्यताओं एवं परंपराओं का विरोध कर अपने सुख के लिए करती है, फिर भी उसे अपने अकेलेपन, उदासी और निराशा का शिकार होना पड़ता है। अपने मन को मार कर डॉ. जोशी के साथ ॲडजेस्टमेंट करती है। आज मध्यवर्गीय नारियाँ पुनिर्विवाह तो करती हैं लेकिन उनके हाथ विफलता एवं दुःख ही आता है। आज मध्यवर्गीय नारियों ने विवाह को खुले तौर पर नकारा नहीं लेकिन ऐसे विवाह को त्याज माना है, जहाँ पारस्परिक विश्वास, दोस्ती भाव एवं सद्भावना नहीं है। अजय और मीरा का परिवार भी कलकत्ते जैसे शहर में मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं जैसे अर्थाभाव, मकान की समस्या, मानसिक तनाव की समस्या आदि को सहता है। अजय डिविजनल मॅनेजर होकर भी सुखी जीवन जी नहीं पाता है। उसमें भी अकेलापन, हीनता, अहं की भावना नीहित है जो आज प्रत्येक मध्यवर्गीय पुरुष में दिखाई देती है।

निष्कर्षतः 'आपका बंटी' उपन्यास में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन जीनेवाले प्रिंसिपल, डॉक्टर, मॅनेजर, वकील, अध्यापक आदि के जीवन संघर्ष एवं समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। महानगरों में मध्यवर्गीय टूटते दांपत्य जीवन एवं उपेक्षित बालकों की समस्याओं को मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास में यथार्थ रूप में अंकित किया है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत अध्याय में मध्यवर्गीय सदस्यों का विभाजन कर उनकी जीवन पद्धति एवं जीवन संघर्ष को रूपायित किया है। चारों उपन्यासों में किस प्रकार के मध्यवर्ग का चित्रण हुआ है, उनकी शिक्षा, उनका रहन-सहन, उनके जीवन की समस्याएँ, उनकी आर्थिक स्थिति, उनकी सामाजिक स्थिति आदि का चित्रण इस अध्याय में किया है। राजेंद्र यादव ने 'शह और मात' उपन्यास में मध्यवर्गीय लेखक, उच्च शिक्षा पानेवाले छात्र, अध्यापक, डॉक्टर, सरकारी कर्मचारी

आदि सदस्यों का चित्रण है। इसमें मध्यवर्गीय महानगरों में रहनेवाले लेखक के व्यक्तिगत जीवन संघर्ष, ट्रेजडी को व्यक्त किया है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन को रूपायित करते हुए पत्रकार, अध्यापक, कलाकार, चित्रकार, पोलिटिकल सेक्रेटरी, मॅनेंजर, कार्यालयीन कर्मचारी, धनी लोग, उद्‌योगपति आदि मध्यवर्गीय सदस्यों का अंकन किया है। इस उपन्यास में महानगरीय पत्रकारों का दुरावस्था, जीवन की अस्थिरता प्रमुखता से अंकित किया है। साथ-साथ महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार की विघटन की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया हैं।

निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में मध्यवर्गीय परिवार के उच्च शिक्षा पाने के लिए गए छात्र के जीवन पद्‌धति एवं समस्याओं का चित्रण किया है। इस उपन्यास में चित्रित परिवेश अभारतीय होने के कारण विदेशी शहरी मध्यवर्ग के जीवन पद्‌धति, जीवन विषयक दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, रहन-सहन, पारिवारिक दृष्टिकोण को चित्रित किया है। मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में अध्यापक, प्रिन्सिपल, डॉक्टर, मॅनेजर, वकील आदि मध्यवर्गीय सदस्यों की जीवन पद्‌धति को चित्रित किया है।

इन चारों उपन्यासों में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। महानगरों की गतिमान परिस्थितियों के कारण मध्यवर्गीय जीवन में हो रहे परिवर्तन को भी इन उपन्यासों में सूक्ष्मता से अंकित किया है। ये उपन्यास मध्यमवर्गीय बहुविविधता को दर्शाते हैं। साथ-ही-साथ मध्यमवर्ग के बहुआयामी स्तरों पर प्रकाश डालते हैं। सभी स्तरों की मनोदशा, स्थिति, सामाजिक गति, नैतिक प्रवृत्ति, अहंभाव, संघर्ष आदि का चित्रण करते हुए मध्यवर्ग के भविष्य की ओर संकेत किया है।

इससे स्पष्ट होता है मध्यवर्ग जिस परिवेश में पल रहा है वह मजबूरी एवं समन्वयता का प्रतीक है। नैतिक मापदंडों ने उसे कसकर जकड़ा है, कमजोर मानसिकता उसे काट नहीं सकती, भाग्य भरोसेवादी प्रवृत्ति संघर्ष नहीं चाहती, ऐसे परिवेश में मध्यवर्ग जी रहा है। इसके यहाँ दर्शन होते हैं। विवेच्य उपन्यास वर्तमान मध्यवर्गीय परिवार का, पारिवारिक जीवन का दस्तावेज ही है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. हेमराज निर्मम - हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग, पृ. 27
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, पृ. 83
3. डॉ. भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र यादव का रचना संसार, पृ. 101
4. डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों का स्वरूप, पृ. 31
5. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 58
6. वही, पृ. 129
7. वही, पृ. 95
8. डॉ. मंजुला गुप्ता - हिंदी उपन्यास : समाज और व्यक्ति का द्वंद्व, पृ. 124
9. डॉ. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 131
10. वही, पृ. 102
11. नेमिचंद जैन - अधूरे साक्षात्कार, पृ. 130
12. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 213
13. शशिभूषण अग्रवाल - भारतीय उपन्यास : अंतिम दशक, पृ. 240
14. पारूकांत देसाई - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास, पृ. 149
15. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 21
16. वही, पृ. 140
17. डॉ. कुसुम शर्मा - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास : विविध प्रयोग, पृ. 52
18. पारूकांत देसाई - आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास, पृ.
19. चंद्रकांत बांदिवडेकर - उपन्यास स्थिति और गति, पृ. 243
20. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 32